

हालाँकि, राष्ट्र संघ की कुछ सीमाएँ भी थीं जैसे:

- अंतर्राष्ट्रीय शांति को बनाए रखने में इसकी सीमित सफलता; क्योंकि यह द्वितीय विश्व युद्ध के लिए जिम्मेदार कई संघर्षों में हस्तक्षेप करने में विफल रहा था। जैसे- एबिसिनिया पर इतालवी आक्रमण, स्पेनिश गृहयुद्ध और दूसरा चीन-जापानी युद्ध।
- इसके अतिरिक्त, राष्ट्र संघ के पास शक्तियाँ कम थीं और द्वितीय विश्व युद्ध होने की पीछे घटित होने वाली प्रमुख घटनाओं जैसे हिटलर द्वारा राइनलैंड का पुनः सैन्यीकरण, ऑस्ट्रिया के साथ सुडेटनलैंड और एंजलस पर नियंत्रण आदि पर अधिकांशतः ये मौन रहा। ये गतिविधियाँ वर्साय की संधि द्वारा प्रतिबंधित थी।
- संगठन के भीतर सामान्य कमजोरियाँ, जैसे मतदान की संरचना, जिसने प्रस्तावों की पुष्टि को कठिन बना दिया था। इसके अलावा लीग में विश्व के देशों का प्रतिनिधित्व अधूरा था।
- इसके अतिरिक्त, संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा राष्ट्र संघ में शामिल होने से इंकार करने के कारण भी इसकी शक्ति सीमित रह गई थी।

हालाँकि, इस प्रकार राष्ट्र संघ सदस्य देशों के बीच तनाव को कुछ कम करने में कामयाब भी रहा था तथा उसने अंतरराष्ट्रीय कानून की अवधारणा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया, किंतु वह सदस्य देशों को द्वितीय विश्व युद्ध शुरू करने से रोकने में असमर्थ भी रहा था।

12. What are the factors that led to the Russian Revolution of 1917? Discuss its consequences.

वे कौन-से कारक हैं, जिन्होंने 1917 की रूसी क्रांति को प्रेरित किया? इसके परिणामों की विवेचना कीजिए।

दृष्टिकोण:

- रूसी क्रांति पर एक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।
- उन परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए जिनके कारण रूसी क्रांति हुई थी।
- वैश्विक स्तर पर रूसी क्रांति के प्रभावों पर प्रकाश डालिए।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

रूसी क्रांति (1917) में दो महत्वपूर्ण क्रांतियाँ/घटनाएँ शामिल हैं। पहली, **फरवरी क्रांति** जिसके कारण जार के शासन का अंत हुआ और एक अस्थायी सरकार की स्थापना प्रारंभ हुई और दूसरी, **अक्टूबर क्रांति** जिसके परिणामस्वरूप बोल्शेविकों द्वारा तख्तापलट करके अस्थायी सरकार को उखाड़ फेंका गया और परिणामतः रूस में एक कम्युनिस्ट राज्य की स्थापना हुई।

1917 की रूसी क्रांति को जन्म देने वाले कारक हैं:

- **सामंती समाज की उपस्थिति:** 19वीं शताब्दी में, जब यूरोप सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। रूस उस समय जार के सामंती निरंकुश शासन के अधीन था। इस शासन की नौकरशाही बड़े अधिकारियों की अधिकता से भरा हुआ, अनम्य, विशेषाधिकार प्राप्त और अकुशल था।
- **रूस में औद्योगिक क्रांति की प्रकृति और श्रमिकों में असंतोष:** रूस के उद्योगों के लिए अधिकांश निवेश विदेशों से प्राप्त होता था, जिसमें श्रमिकों की स्थिति की चिंता किए बिना प्रमुखता से त्वरित लाभ पर ध्यान दिया गया था। अपर्याप्त पूंजी वाले रूसी पूंजीपति वर्ग अक्सर विदेशी निवेशकों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए श्रमिकों की मजदूरी में कटौती किया करते थे। व्यावहारिक रूप से बिना किसी राजनीतिक अधिकार के श्रमिक कठिन परिस्थितियों में काम कर रहे थे।
- **किसानों की दयनीय स्थिति:** किसानों के पास जोत का आकार काफी छोटा हुआ करता था। छोटी जोतों पर अत्यधिक बकाया ऋण राशि के कारण किसानों के पास उन्हें विकसित करने के लिए पर्याप्त पूंजी उपलब्ध नहीं होती थी। इसी कारण व्यापक स्तर पर किसानों में अशांति का प्रसार हुआ।
- **प्रथम विश्व युद्ध में भाग लेने के कारण उत्पन्न प्रभाव:** प्रथम विश्व युद्ध के कारण बढ़ती मुद्रास्फीति, भोजन की कमी, हताहतों की अधिक संख्या आदि ने लोगों के जीवन को दयनीय बना दिया था। इसकी परिणति फरवरी क्रांति में परिलक्षित हुई।
- **बुद्धिजीवियों की भूमिका:** पश्चिमी यूरोप के उदार विचारों एवं टॉल्स्टॉय, तुर्गनेव और डोस्टोवस्की के कार्यों ने रूसी जीवन की कमियों की ओर ध्यान आकर्षित किया। लोगों तथा शिक्षित वर्गों के बीच एक राजनीतिक जागृति का प्रसार होने के कारण उनके द्वारा राजनीतिक अधिकारों की मांग की जाने लगी। साथ ही, कार्ल मार्क्स, मैक्सिम गोर्की और बाकुनिन के समाजवादी विचारों ने किसानों और श्रमिकों को भी काफी प्रभावित किया।